आज दिनांक 16/08/2023 को अपराह्न 2:00 बजे दर्शनशास्त्र विभाग में प्रोफेसर प्रभात कुमार, संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष की अध्यक्षता में पाठ्यक्रम समिति (BOS) की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति रही तथा विषय विशेषज्ञों ने ऑनलाईन प्रतिभाग किया।

- प्रो. प्रभात कुमार – अध्यक्ष
- प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ला -- विषय विशेषज्ञ ऑनलाइन उपस्थिति
- प्रो. विभा मुकेश – विषय विशेषज्ञ ऑनलाईन उपस्थिति
- प्रो. ब्रह्मदेव विद्यालंकार – विशेष आमंत्रित 14/08/23
- डॉ. सोहनपाल सिंह आर्य – विशेष आमंत्रित 16/08/2023
- डॉ. बबीता शर्मा – असि0 प्रोफेसर 16/08/2023
- डॉ. बबलू वेदालंकार – असि0 प्रोफेसर 16/8/23
- डॉ. भारत वेदालंकार – विशेष आमंत्रित 16/8/2023
- डॉ. आशीष कुमार – विशेष आमन्त्रित 16-8-2023

कार्यवाही – विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष प्रो. प्रभात कुमार ने बहुविषयक चतुर्वर्षीय स्नातक बी.ए. प्रोग्राम एवं चतुर्वर्षीय स्नातक (ऑनर्स / विद्यालंकार - दर्शनशास्त्र) पाठ्यक्रम से सम्बन्धित निम्नलिखित पाठ्यक्रम BOS की बैठक में विचार हेतु प्रस्तुत किये –

बहुविषयक चतुर्वर्षीय स्नातक बी.ए. पाठ्यक्रम –

- BPI-C101 (भारतीय दर्शन)
- BPI-C201 (पाश्चात्य दर्शन)
- BPI-C311 (नीतिशास्त्र)
- BPI-S311 (पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व विकास – सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)
- BPI-C411 (पाश्चात्य तर्कशास्त्र)
- BPI-S411 (शास्त्रार्थ : सिद्धान्त एवं परम्परा – सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)

चतुर्वर्षीय स्नातक बी.ए. (ऑनर्स / विद्यालंकार) पाठ्यक्रम –

- HPI-C101 (प्राचीन भारतीय दर्शन - I)
- HPI-C102 (प्राचीन भारतीय दर्शन - II)
- HPI-S101 (पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व विकास)
- HPI-C311 (भारतीय नीतिशास्त्र)
- HPI-C312 (पाश्चात्य नीतिशास्त्र)

- HPI-C313 (नैतिक निर्णय निर्माण)
- HPI-G311 (दार्शनिक प्रविधि)
- HPI-C411 (भारतीय तर्कशास्त्र)
- HPI-C412 (पाश्चात्य तर्कशास्त्र)
- HPI-C413 (विज्ञान का दर्शन)
- HPI-G411 (प्रबन्धन का दर्शन)

समिति ने बैठक में प्रत्येक पाठ्यक्रम पर बिन्दुवार विचार-विमर्श किया तथा विषय विशेषज्ञों – प्रो0 सन्तोष कुमार शुक्ला और प्रो0 विभा मुकेश ने उक्त पाठ्यक्रमों से सम्बन्धित अनेक उपयोगी सुझाव दिये तथा अन्य सभी उपस्थित सदस्यों ने भी इन पाठ्यक्रमों को अन्तिम रूप देने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिये। उन सबके आलोक में विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष प्रो. ब्रह्मदेव विद्यालंकार ने सभी सदस्यों एवं शिक्षकों, शिक्षिकाओं से परामर्श कर उक्त सभी सुझावों को समाहित करते हुये पाठ्यक्रम को अन्तिम रूप प्रदान किया, जिसे सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

16/8/23 16/08/2023 16/8/23

16-8-2023 16/08/2023

16/8/23

ओ३म्

दर्शनशास्त्र विभाग

Department of Philosophy

गुरुकुल काङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar, UK. Bharat (India)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) वर्ष 2020 पर आधृत
चतुर्वर्षीय स्नातक (ऑनर्स/विद्यालंकार)
दर्शनशास्त्र पाठ्यक्रम

Undergraduate (B.A. - Honours/Vidyalankar), Four Year's Course for Philosophy under National Education Policy (NEP) - 2020

शैक्षणिक सत्र - 2022-23 से प्रभावी

Implemented From Academic Session - 2022-23

ओ३म्

दर्शनशास्त्र विभाग

Department of Philosophy

गुरुकुल काङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar, UK. Bharat (India)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) वर्ष 2020 पर आधृत
चतुर्वर्षीय स्नातक (ऑनर्स/विद्यालंकार)
दर्शनशास्त्र पाठ्यक्रम

Undergraduate (B.A. - Honours/Vidyalankar), Four Year's Course for Philosophy under
National Education Policy (NEP) - 2020

शैक्षणिक सत्र - 2022-23 से प्रभावी

Implemented From Academic Session - 2022-23

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

(Programme Objectives)

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के निर्देशों के अनुसार गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय) का स्नातक स्तरीय (B.A. Hons) दर्शनशास्त्र विषय का पाठ्यक्रम NEP - 2020 के अनुरूप संरचित है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को दर्शनशास्त्र में विद्यमान विविध दार्शनिक तत्त्वों का सम्यक् बोध कराना है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु पाठ्यक्रम में भारतीय व पाश्चात्त्य दर्शन में वर्णित ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय, नीतिशास्त्रीय व तर्कशास्त्रीय विषयों को सम्मिलित किया गया है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में जीवन को उसकी समग्रता में देखने का एक दार्शनिक कौशल विकसित होगा तथा उनमें बौद्धिक, तार्किक, भावनात्मक बुद्धि, नैतिक व यथेष्ट आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का परिमार्जन होगा। विद्यार्थी सामाजिक जीवन के लिए उपयोगी न्याय, स्वतन्त्रता, जीवन के मौलिक अधिकार, कर्त्तव्य व सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्थाओं के दार्शनिक अवधारणाओं को समझने, उनका निर्माण एवं उनका अनुपालन करने में कुशल होंगे। यह कुशलता व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को अवश्य ही उन्नत बनाने में सहायक होगी। प्रस्तुत पाठ्यक्रम का ध्येय विद्यार्थियों में इसी दार्शनिक कुशलता को विकसित करना है।

Four Year Bachelor of Arts (Hons) in Philosophy,

Faculty of Humanities/Oriental Studies, Gurukula Kangri (DU) Haridwar.

सत्र Sem.	Discipline Specific Core (DSC) 6 cr	Discipline Specific Elective (DSE) 6 cr	Generic Elective (GE) 6cr	Ability Enhancement Compulsory Courses (AECC) 4cr	Skill Enhancement Courses (SEC) 4cr	Value Addition Courses (VAC)/ Industrial Training/Survey and Field work/research Project/ Dissertation	Total Credits
I	HPI-C111 भारतीय दर्शन - I (Indian Philosophy -I) HPI-C112 भारतीय दर्शन - II (Indian Philosophy -II)			Language and Literature (4)	**HPI-S111** **पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व विकास (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)** **[Patanjal Yoga & Personality Developments (Theoretical & Practical)]**	Yogic Science/ Human Psychology (2)	22
II	HPI-C211 प्राचीन पाश्चात्य दर्शन (Classical Western Philosophy) HPI- C212 आधुनिक पाश्चात्य दर्शन (Modern Western Philosophy)			Environmental Science & Sustainable Development (4)	HPI-S211 **शास्त्रार्थ – सिद्धान्त एवं परम्परा (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)** **[Shāstrārtha – Theory and Tradition (Theoretical & Practical)]**	Physical Education and Sports/ Human Psychology (2)	22
AWARD OF CERTIFICATE (after 1 year: 44 Credits)							
III	HPI-C311 भारतीय नीतिशास्त्र (Indian Ethics) HPI-C312 पाश्चात्य नीतिशास्त्र (Western Ethics) HPI-C313 नैतिक निर्णय निर्माण (Ethical Decision Making)		HPI-G311 दार्शनिक प्रविधि (Philosophical Method)			IT Skills, Data Analysis (2)	26
IV	HPI-C411 भारतीय तर्कशास्त्र (Indian Logic) HPI-C412 पाश्चात्य तर्कशास्त्र (Western Logic) HPI-C413 विज्ञान का दर्शन (Philosophy of Science)		HPI – G411 प्रबन्धन का दर्शन (Philosophy of Management)			Science and Society (2)	26

Award of Diploma (After 02 Years: 96 Credits)							
V	HPI-C511 वैदिक दर्शन (Vedic Philosophy) HPI-C512 भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन (Scio & Political Philosophy)	HPI-E511 धर्म दर्शन (***Philosophy of Religion***) / HPI-E512 जैन दर्शन (Jainism) / HPI-E512 बौद्ध दर्शन HPI/	HPI-G511 अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics)			Ethics & Culture/BKT (2)	26
VI	HPI-C611 वेदान्त दर्शन (Vedanta Philosophy) HPI-C612 पाश्चात्य सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन (Western Socio & Political Philosophy)	HPI-E611 बी. आर. अम्बेडकर के दार्शनिक विचार (Philosophical Thought of B.R. Ambedkar)/ HPI-E612 जैव - नीतिशास्त्र (Bioethics)/ HPI-E613 प्रौद्योगिकी एवं नीतिशास्त्र (Technology and Ethics)	HPI-G611 दार्शनिक विधियाँ (Philosophical Method)			Dissertation on Major (6)	30
Awards of Bachelor of Arts (Hons) in Discipline (3 Years) After 3 Years: 152 Credits)							
VII	***HPI-C711*** समकालीन भारतीय दर्शन ***(Contemporary Indian Philosophy)*** ***HPI-C712*** समकालीन पाश्चात्य दर्शन ***(Contemporary Western Philosophy)***	HPI-E711 स्वामी दयानन्द का दर्शन (Philosophy of Swami Dayananda)/ HPI-E712 महर्षि मनु का दर्शन (Philosophy of Maharshi Manu)				Internship (12)	30
VIII	***HPI-C811*** भारतीय भाषा दर्शन ***(Indian Language Philosophy)*** ***HPI-C812*** पाश्चात्य विश्लेषणात्मक दर्शन ***(Western Analytical Philosophy)***	HPI-E811 सौन्दर्यशास्त्र (Aesthetic) / HPI – E812 नारीवाद (Feminism)				Thesis (12)	30
Award of Bachelor of in arts (Hons) in Discipline with Research (after 4 Years: 212 Credits)							

दर्शनशास्त्र विभाग, गुरुकुल काङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

चार वर्षीय स्नातक स्तर (B.A. - Hons) पाठ्यक्रम

कार्यक्रम अध्ययन के परिणाम [Programme Outcomes (POs)]

Pos	Attributes
PO 1	दर्शन के मूलभूत तत्त्वों को समझ सकेंगे।
PO 2	दार्शनिक अवधारणाओं का विश्लेषण एवं समीक्षा कर सकेंगे।
PO 3	ज्ञान के स्वरूप, प्रामाणिकता व ज्ञान के सीमाओं को समझने में निपुण हो सकेंगे।
PO 4	किसी तत्त्व से सम्बन्धित संज्ञानात्मक दावों की परीक्षा कर सकेंगे।
PO 5	जगत् के मूलतत्त्व के सम्बन्ध में दार्शनिक सिद्धान्तों को समझ सकेंगे।
PO 6	समुचित विधि से तर्क कर सकेंगे।
PO 7	यथार्थ एवं अयथार्थ में मूलतः भेद को भी स्पष्ट कर सकेंगे।
PO 8	किसी नियम आदि की तार्किक वैधता की जाँच कर सकेंगे।
PO 9	तार्किक अनुमान व तार्किक सामान्यों की स्थापना कर सकेंगे।
PO 10	भारतीय व पाश्चात्त्य नैतिक सिद्धान्तों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।
PO 11	शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित, अच्छा-बुरा, सद्गुण-दुर्गुण आदि नैतिक प्रत्ययों का यथेष्ट अर्थ प्रस्तुत कर पायेंगे।
PO 12	न्याय, स्वतन्त्रता, सम्प्रभुता, अधिकार, कर्त्तव्य, दण्ड आदि सामाजिक-राजनैतिक प्रत्ययों का समीक्षात्मक मूल्याङ्कन कर सकेंगे।
PO 13	नैतिक निर्णयों का निर्माण कर सकेंगे।
PO 14	जीवन और जगत् को उसकी समग्रता में समझने में निपुण हो सकेंगे।
PO 15	यौगिक क्रियाओं के द्वारा मन व शरीर को स्वस्थ रख सकेंगे।

कार्यक्रम अध्ययन के विशिष्ट परिणाम [Programme Specific Outcomes (PSOs)]

S.N.	Attributes
PSO 1	मानवीय समाज, समूह अथवा संस्थानों के सञ्चालन हेतु ऐसे नियमों व कानूनों का निर्माण कर सकेंगे, जिनमें न्याय, समता, स्वतन्त्रता, अधिकार व कर्त्तव्य आदि नैतिक मूल्यों का समावेश हो।
PSO 2	किसी कथन के सत्यता की तार्किक परीक्षा करने में निपुण हो सकेंगे।
PSO 3	सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन में उत्पन्न होने वाले नैतिक द्वन्द्वों का समुचित समाधान कर सकेंगे।
PSO 4	विविध रोजगार-परक, प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में मूल्याङ्कन किये जाने वाले बौद्धिक, तार्किक एवं नैतिक दक्षता को प्राप्त कर सकेंगे।
PSO 5	तार्किक अथवा युक्तिसंगत सम्भाषण कर सकेंगे।
PSO 6	व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन का प्रबन्धन करने में निपुण हो सकेंगे।
PSO 7	विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) परिष्कृत होगी।
PSO 8	दार्शनिक अनुसंधान की क्रिया कर सकेंगे।
PSO 9	विपरीत अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनःस्थिति को शान्त व स्थिर रख सकेंगे।

सत्र - प्रथम

Semester – I

DSC | **भारतीय दर्शन -1** | **पूर्णाङ्क 100**

Paper Code - HPI-C111 | **Indian Philosophy** | **सत्रान्त परीक्षा : 60**

सत्रीय मूल्याङ्कन : 40

क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को दर्शनशास्त्र विषय के विविध आयामों से परिचित कराना है। इसका ध्येय विद्यार्थियों में दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोण को विकसित करना है, जिससे छात्र जीवन एवं जगत् से सम्बन्धित ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय अथवा नैतिक मूल्य आदि विविध विषयों के सम्बन्ध में एक स्पष्ट समझ बना सकें तथा दर्शनशास्त्र एवं अन्य शास्त्रों के मध्य वर्णित विशिष्ट सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय मनीषियों द्वारा विचार किये गये प्रमुख दार्शनिक तत्त्वों को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय दार्शनिक विचारों से भलीभाँति अवगत कराना है। इन विशिष्टताओं के साथ यह पाठ्यक्रम छात्रों को दर्शनशास्त्र विषय के सम्बन्ध में सशक्त चिन्तन-शक्ति प्रदान करेगा।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई I

- दर्शनशास्त्र का अर्थ, स्वरूप, उत्पत्ति, विषय-वस्तु (दर्शनशास्त्र की प्रमुख शाखाएं – ज्ञानमीमांसा - तर्कशास्त्र, तत्त्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र) दर्शनशास्त्र का महत्त्व। फिलॉसॉफी एवं दर्शन के मध्य अन्तर।
- भारतीय दर्शन के लक्षण, वर्गीकरण – आस्तिक एवं नास्तिक सम्प्रदाय।

इकाई II

- वेद एवं उपनिषदों का परिचय।
- उपनिषद् - ब्रह्म, आत्मा एवं जगत्, पञ्चकोश, आत्मा की चार अवस्थाएं।
- भगवद्गीता - ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग।

इकाई III

- चार्वाक (लोकायत) - ज्ञानमीमांसा, तत्त्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र ।

इकाई IV

- जैन दर्शन - ज्ञानमीमांसा, सत् का स्वरूप और वर्गीकरण, नय सिद्धान्त, स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, कर्म, बन्धन एवं मुक्ति का सिद्धान्त।

इकाई V

- बौद्ध दर्शन - ज्ञानमीमांसा, चार आर्य सत्य, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद, क्षणिकवाद, निर्वाण।

Unit I

- Meaning, Nature, Origin and Subject-Matter of Philosophy (Major Branches of Philosophy – Epistemology - Logic, Metaphysics, Ethics), Importance of Philosophy, Distinction between Darśana and Philosophy.
- Characteristics & Classification of Indian Philosophy – Āstika & Nāstika,

Unit II

- Introduction to the Vedas & Upanishadas.
- Upanishad - Brahaman, Ātman & Jagat, Panchkosh, Four stages of Ātman
- Bhagavadgītā - Jñānayoga, Karmayoga and Bhaktiyoga.

Unit III

- Cārvāk (Lokāyata) – Epistemology, Metaphysics and Ethics.

Unit IV

- Jainism: Epistemology, Nature and Classification of Reality, Theory of Naya, Syādavāda, Anekāntavāda. Theory of Karma, Bondage and Liberation.

Unit V

- Buddhist Philosophy - Epistemology, Four Noble Truths, *Pratītyasamutpād*a, Anātmavāda (No-soul theory), Theory of Momentariness, Nirvāna.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcomes)

CO1 - दर्शनशास्त्र के स्वरूप, उसके विषय-वस्तुओं एवं उनका महत्त्व तथा अन्य शास्त्रों से दर्शन के सम्बन्ध को समझ सकेंगे।

CO2- ज्ञानमीमांसीय, तर्कशास्त्रीय, तत्त्वमीमांसीय व नीतिमीमांसीय आदि दार्शनिक विषय-वस्तु का वर्गीकरण एवं व्याख्या कर सकेंगे।

CO3 - गीता, चार्वाक्, जैन व बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे ।

CO4- जगत् के मूलतत्त्व अथवा सत् तत्त्व के स्वरूप तथा जीव, जगत् एवं ईश्वर के सम्बन्ध में वैदिक, औपनिषदिक, गीता एवं भारतीय दर्शन के नास्तिक सम्प्रदायों के अन्वेषणों को भलीभाँति समझकर उनकी व्याख्या एवं समीक्षा कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):

- Chatterjee, S - Datta. D.M (1984) *An Introduction to Indian Philosophy*, 8th ed., University of Calcutta, (Eng-Hindi)
- Dasgupta, S.N (2004), *A History of Indian Philosophy, vol.1*, Delhi: MLBD Publishers.
- Datta, D.M., (1972) *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta.
- Hiriyanna, M. (1994) *Outlines of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
- Hiriyanna, M. (2015) *The Essentials of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
- Mohanty, J.N. (1992) *Reason and Tradition in Indian Thought,* Oxford: Clarendon Press. (2002)
- Organ, T. W. (1964) *The Self in Indian Philosophy*. London: Mounton - Co.
- Radhakrishnan, S. (1929) *Indian Philosophy, Volume 1*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London: George Allen and Unwin Ltd.
- Radhakrishnan, S. and Moore, C. A. (1967) *A Sourcebook in Indian Philosophy*, Princeton.
- Raju, P.T. (1985) *Structural Depths of Indian Thought,* Albany, NY: State University of New York Press.
- Sharma, C.D (2000), *A Critical Survey of Indian Philosophy*, Motilal Banarasidas, Delhi.
- वेदालंकार, जयदेव, *भारतीय दर्शन की समस्याएं,* प्राच्यविद्या शोध प्रकाशन, हरिद्वार।

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Point Scale

Scale	Point
Below 20% similarity between PO and CO	1
20% to 50% Similarity between PO and CO	2
Above 50% Similarity between PO and CO	3

	Po 1	P O 2	PO 3	P0 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PSO 2	PS O 3	PS O 4	PSO 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1	3	3												2					1				1	
CO2	3	3												2					1				1	
CO3	1	2	3	2		1	3	3	2								2		2				2	
CO4	1	2			3		2							3	2				2				2	

Note: 1-Low, 2-Medium, 3-High

DSC | **भारतीय दर्शन - II** | **पूर्णाङ्क :100**

Paper Code HPI-C112 | **Indian Philosophy – II** | **सत्रान्त परीक्षा : 60**

सत्रीय मूल्याङ्कन : 40

क्रेडिट : 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय षड्दर्शन में वर्णित ज्ञानमीमांसीय एवं तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्तों का ज्ञान प्रदान करना है, जिससे कि वे ज्ञान व जीवन जगत् से सम्बन्धित प्राचीन भारतीय दार्शनिकों के मौलिक विचारों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकें। इस पाठ्यक्रम के सम्यक् अध्ययन से ज्ञान व तत्त्व के सम्बन्ध में प्राचीन भारतीय महर्षियों ने जो दिव्य अन्वेषण किया है, उसका लाभ प्राप्त कर विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में उत्पन्न होने वाली दार्शनिक समस्याओं का निवारण करने में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे। ज्ञात है कि भारतीय दर्शन त्रिविध दुःखों के नाश के उपायों की अद्भुत मीमांसा प्रस्तुत करते हैं, जिनका लाभ विद्यार्थी उठा सकें यह ध्येय भी इस पाठ्यक्रम के रचना में सन्निहित है।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई I

- सांख्य :- पुरुष, प्रकृति, मुक्ति, विकासवाद, सत्कार्यवाद।
- योग :- चित्त, चित्तवृत्ति, चित्तभूमियाँ, अष्टाङ्ग-योग, ईश्वर।

इकाई II

- न्याय :- प्रमा, अप्रमा एवं प्रमाण। प्रत्यक्ष एवं उसके प्रकार - निर्विकल्पक, सविकल्पक लौकिक, अलौकिक एवं योगज। अनुमान, व्याप्ति, परामर्श, अनुमान के प्रकार - पूर्ववत्, शेषवत्, सामान्यतोदृष्ट , केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी, अन्वय-व्यतिरेकी, स्वार्थानुमान, परार्थानुमान। उपमान, शब्द, ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण।

इकाई III

- वैशेषिक :- ज्ञानमीमांसा, पदार्थ - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय एवं अभाव, परमाणुवाद।

इकाई IV

- मीमांसा (प्रभाकर एवं भट्ट) :- ज्ञानमीमांसा, धर्म, अपूर्व।
- अद्वैत वेदान्त :- ब्रह्म, माया, मुक्ति, विवर्तवाद।
- विशिष्टाद्वैत :- ब्रह्म, माया, मुक्ति, ब्रह्म परिणामवाद।

Unit I

- Sāṅkhya :- Puruşa, Prakiti, Mukti, Theory of Evolution, Satkāryavāda.
- Yoga :- Citta, Cittavritti, Cittabhumiyan, Eight-Fold Path (Astāng Yoga), God.

Unit II

- Nyāya :- Pramā, Apramā & Pramānas. Pratyaksa & its Types – Nirvikalpaka, Savikalpaka, Laukika, Alaukika & Yogaja. Anumān, Vyāpti, Parāmarsha, Classification of Anumāna - Purvavat, Sheshavat, Samanyatodrista, Kevalanvayi, Kevalavyatriki, Anvayavyatireki, Svārthānumān, Parārthānumān, Upman, Shabda, Proofs for the Existence of God.

Unit III

- Vaiśeşika :- Epistemology, Padārthas - Dravya, Guna, Karma, Samanya, Visesa, Samavaya and Abhāva, Atomism.

Unit IV

- Mīmāmsā (Prabhākar & Bhatta) :- Epistemology, Dharma, Apūrva.
- Advaita Vedānta :- Brahman, Māyā, Mukti, Vivartavad.
- Viśişţādvaita :- Brahman, Māyā, Mukti, Brahman Pariamvad.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

CO1 – इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी भारतीय षड्दर्शन के ज्ञानमीमांसीय एवं तार्किक सिद्धान्तों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे। यह ज्ञान उनको ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान के स्रोत, ज्ञान की प्रामाणिकता, यथार्थ ज्ञान - अयथार्थ ज्ञान आदि अवधारणाओं की समीक्षात्मक व्याख्या करने में सहायता प्रदान करेगा।

CO2 - षड्दर्शन के तत्त्वमीमांसीय विचारों को भलीभाँति समझ सकेंगे। यह समझ विद्यार्थियों को जीवन जगत् के मूल अथवा परम तत्त्व, आत्मा, जगत् एवं ईश्वर आदि के सम्बन्ध में एक दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने में सहायता प्रदान करेगी।

CO3 – षड्दर्शन में वर्णित मोक्ष प्राप्ति के उपायों का ज्ञान प्राप्त होगा। यह ज्ञान उन्हें जीवन के आदर्श को समझने और उसको प्राप्त करने में सहायता प्रदान करेगा।

CO4 – योग-दर्शन की चित्तभूमियों एवं चित्तवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे तथा उनके उपाय हेतु योग विधियों का प्रयोग कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):

- Chatterjee, S - Datta. D.M (1984) *An Introduction to Indian Philosophy*, 8th ed., University of Calcutta, (Eng-Hindi)
- Datta, D.M., (1972) *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta.
- Hiriyanna, M. (1994) *Outlines of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
- Mohanty, J.N. (1992) *Reason and Tradition in Indian Thought,* Oxford: Clarendon Press.
- Mohanty, J.N. (2002) *Essays on Indian Philosophy*, (2nd ed) ed. by P. Bilimoria, UK: Oxford University Press.
- Murthi, K. S. (1959) *Revelation and Reason in Advaita Vedanta*. Waltair: Andhra University Press.
- Organ, T. W. (1964) *The Self in Indian Philosophy*. London: Mouton - Co.
- Pandey, S. L. (1983) *Pre-Samkara Advaita Philosophy*, (2nd ed.) Allahabad: Darsan Peeth.
- Radhakrishnan, S. (1929) *Indian Philosophy, Volume 1*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London: George Allen and Unwin Ltd.
- Radhakrishnan, S. and Moore, C. A. (1967) *A Sourcebook in Indian Philosophy*, Princeton.
- Raju, P.T. (1985) *Structural Depths of Indian Thought,* Albany, NY: State University of New York Press.
- Sharma, C.D (2000), *A Critical Survey of Indian Philosophy*, Motilal Banarasidas,
- वेदालंकार, जयदेव, भारतीय दर्शन की समस्याएं, प्राच्यविद्या शोध प्रकाशन, हरिद्वार।

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	P O 2	P O3	P0 4	P O5	P O6	P O7	P O8	P O9	P O1 0	P O1 1	P O 12	P O 13	PO 14	PO 15	PS O1	PS O2	PS O3	PS O4	PS O5	PS O6	PS O7	PS O8	PS O 9
CO1	1	3	3	3		3	3	3	3										1				1	
CO2	1	3			3		3							3					2			2	2	
CO3	1	3		2	3									3	3			1	1		3	3	1	3
CO4	1	3			2									3	3			1	2		3	3	1	3

SEC	**पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व**	**पूर्णाङ्क : 100**
Paper Code HPI-S111	**विकास (सैद्धान्तिक एवं**	**सत्रान्त परीक्षा : 60**
	प्रयोगात्मक)	**सत्रीय मूल्याङ्कन : 40**
	Patanjal Yoga & Personality	
	Development (Theoretical &	
	Practical)	
		क्रेडिट : 04

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय योग-विद्या से सम्बन्धित प्रमुख दार्शनिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को योग-विद्या की विशेषताओं एवं प्रमुख यौगिक क्रियाओं का ज्ञान कराना एवं यौगिक पद्धतियों से उनके व्यक्तित्व को परिष्कृत करना है, जिससे विद्यार्थी जीवन में उत्पन्न होने वाली विषम परिस्थितियों में भी स्वयं को संतुलित व निरोगी बनाएं रखने में प्रवीण हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि -

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई – I : योग का परिचय

- योग – परिभाषा, स्वरूप एवं महत्त्व।
- योग के प्रमुख प्रकार– अष्टाङ्ग-योग तथा क्रियायोग।

इकाई – II व्यक्तित्व विकास

- व्यक्तित्व एवं व्यक्तित्व विकास की अवधारणा एवं प्रमुख परिभाषाएं।
- व्यक्तित्व विकास के प्रमुख आयाम एवं उसे प्रभावित करने वाले मुख्य कारक।

इकाई – III व्यक्तित्व विकास में योग की भूमिका - I

- सन्तुलित शारीरिक व्यक्तित्व विकास – आसन एवं प्राणायाम।
- संवेगात्मक स्थिरता – क्रिया-योग की भूमिका।
- सामाजिक समायोजन में सहायक – मैत्री, करुणा, मुदिता एवं उपेक्षा (चित्त प्रसाद के साधन)

इकाई – IV व्यक्तित्व विकास में योग की भूमिका - II

- नैतिक व्यक्तित्व का विकास – यम एवं नियम।
- आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकास – धारणा एवं ध्यान।
- बौद्धिक व्यक्तित्व का विकास – प्राणायाम एवं ध्यान।

इकाई – **V सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक**

- आसन का अभ्यास।
- प्राणायाम का अभ्यास।
- धारणा का अभ्यास।
- ध्यान का अभ्यास।

UNIT – I Introduction to Yoga

- Yoga- Definition, Nature and Importance.
- Main Types of Yoga – Astang-Yoga & Kriya-Yoga.

UNIT– II Personality Development

- Concept of Personality and Personality Development- Main Definitions.
- Main Dimensions of Personality Development, Main Effective Factors.

UNIT – III Role of Yoga in personality Development - I

- Development of Balanced Physical Personality – Aasana and Pranayama.
- Emotional Stability - Role of Kriya Yoga.
- Helpful in Social Adjustment- Maitri, Karuna, Mudita and Upeksha (the Means of Citta Prasada)

UNIT – IV Role of Yoga in personality Development – II

- Development of Moral Personality-Yama and Niyama.
- Development of Spiritual Personality – Dharana and Dhyan.
- Development of Rational Personality – Pranayama and Dhyan.

UNIT – V Theoretical & Practical

- Practice of Asana.
- Practice of Pranayama.
- Practice of Dharana.
- Practice of Dhyana (Meditation).

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

CO1 – इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी योग के अवधारणा को स्पष्टता पूर्वक समझ सेकेंगे।

CO2 – योग के प्रमुख प्रकारों में अन्तर कर सकेंगे।

CO3 - यौगिक क्रिया करके मन को शान्त व स्थिर तथा शरीर को स्वस्थ बना सकेंगे ।

CO4 – यौगिक क्रियाओं से व्यक्तित्व को सकारात्मक दिशा में विकसित कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):

1. Sachdeva, I.P. : Yoga and Depth Psychology
2. पातञ्जल योगसूत्र - व्यासभाष्य
3. सिंह, रामहर्ष (1999). *योग एवं यौगिक चिकित्सा*. चौखम्बा संस्कृति प्रतिष्ठान, दिल्ली।
4. शास्त्री, विजयपाल, (2019). *योग विज्ञान प्रदीपिका*. सत्यम पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
5. परिव्राजक, सत्यवती (2018). *योगदर्शनम्*. वानप्रस्थ साधक आश्रम,
6. योगेन्द्रजीत (1982). *विकासात्मक मनोविज्ञान*. आगरा।
7. भट्ट, कविता (2015). योग दर्शन में प्रत्याहार द्वारा मनोचिकित्सा. किताब महल, इलाहाबाद।
8. महाप्रज्ञ, युवाचार्य (1992). किसने कहाँ मन चंचल है. तुलसी अध्यात्मक नीडम् जैन विश्व भारती, राजस्थान।
9. सिंह, अरूण कुमार **&** सिंह, आशीष कुमार (2002). व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, नरेन्द्र प्रकाश जैन, दिल्ली।

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1	1	3								2				1	3				2		3	2		3
CO2		3								2					3				2		2	2		3
CO3														1	3				1		2	2	1	3
CO4										2				1	3				3			3	1	3

सत्र – द्वितीय

Semester – II

DSC	**प्राचीन पाश्चात्त्य दर्शन**	**पूर्णाङ्क :100**
Paper Code HPI-C211	**Classical Western Philosophy**	**सत्रान्त परीक्षा : 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन : 40
		क्रेडिट : 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में प्राचीन पाश्चात्त्य दार्शनिकों द्वारा विचारे गये प्रमुख दार्शनिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को पाश्चात्त्य दर्शनशास्त्र की विशेषताओं एवं प्रमुख सिद्धान्तों का ज्ञान कराना है, जिससे विद्यार्थी ज्ञान व मूलतत्त्व से सम्बन्धित दार्शनिक चिन्तन में प्रवीण हो सकें।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि -

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई-I

- ग्रीक दर्शन की उत्पत्ति और प्रकृति, पश्चिमी दर्शन की मुख्य विशेषताएं।
- माइलेशियन और पाइथागोरस सम्प्रदाय के परमतत्त्व का सिद्धान्त।

इकाई - II

- इलियाई सम्प्रदाय (पार्मेनाइडीज) का सत् सिद्धान्त, हेराक्लाइट्स का सम्भूति सिद्धान्त।
- एम्पेडाक्लीज़ के तत्त्व का सिद्धान्त।
- एनेक्ज़ागोरस के नाउस का सिद्धान्त।
- ल्यूसिप्पस और डेमोक्रिटस का परमाणु सिद्धान्त।

इकाई-III

- सोफिस्ट (प्रोटॉगोरस) के मुख्य सिद्धान्त – सापेक्षतावाद (मनुष्य सभी वस्तुओं का मानदण्ड है)
- सोक्रेटिक विधि।
- प्लेटो :- ज्ञान और धारणा, प्रत्यय का सिद्धान्त।
- अरस्तू :- प्रत्ययवाद की समीक्षा, द्रव्य एवं आकार, कार्य-कारण, वास्तविकता और सम्भाव्यता।

इकाई-IV

- सेंट ऑगस्टीन के ज्ञान का सिद्धान्त, अशुभ की समस्या।
- सेंट थॉमस एक्विनास का ईश्वर के सम्बन्ध में दृष्टिकोण, विश्वास एवं तर्क के मध्य अन्तर।

UNIT-I

- Origin and Nature of Greek Philosophy, Major Characteristics of Western Philosophy.
- The Ultimate Principles in Milesian and Pythagorean Schools.

UNIT-II

- Being in Eleatic School (Parmenides), Heraclites' Doctrine of Becoming.
- Empedocles' Doctrine of Elements.
- Anaxagoras' Doctrine of Nous.
- Atomic Theories of Leucippus and Democritus.

UNIT-III

- Main Principles of Sophists (Protagoras) - Relativism (Man is Measure of All Things).
- The Socratic Method.
- Plato: - Knowledge and Opinion, Theory of Ideas
- Aristotle: - Review of Idealism, Matter and Form, Causality, Actuality and Potentiality.

UNIT-IV

- St. Augustine's Theory of Knowledge, the Problem of Evil,
- Thomas Aquinas's view of God, Distinction between Faith and Reason.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcomes)

- CO1 – जगत् के मूलतत्त्व के सम्बन्ध में प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों के विचारों समझ सकेंगे एवं उनकी समीक्षात्मक व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 - ज्ञान के स्वरूप एवं स्रोत के सम्बन्ध में सोफिस्ट एवं प्लेटो के मतों, प्लेटो के ज्ञान व धारणा में अन्तर आदि प्रमुख प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिक विचारधाराओं को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।
- CO3 - सुकरात की संवाद विधि को समझ सकेंगे।
- CO4 – अशुभ की समस्या व ईश्वर के सम्बन्ध में पाश्चात्य दार्शनिक विचारों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):

1. Durant, W. (1926). *A Story of Philosophy*, Simon & Schuster

2. Russell, B. (1987). *A History of Western Philosophy*, Union paper Backs, London.

3. Thilly F. (1975). *History of Western Philosophy*, Central Book Depot, Allahabad.

4. Stace, W.T. (1985) *A Critical History of Greek Philosophy*. Macmillan, Delhi,

5. Masih, Y. (1994) *A Critical History of Western Philosophy*, Motilal Banarasidas, Delhi.

6. सिंह, बी. एन. (1973). *पाश्चात्य दर्शन*. स्टूडेन्ट्स फ्रेन्ड्स एण्ड कम्पनी, वाराणसी.

7. दयाकृष्णा (1988). *पाश्चात्य दर्शन*. भाग – 1, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

8. शर्मा, सी. डी. (1992). *पाश्चात्य दर्शन*. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली.

9. श्रीवास्तव, जगदीश सहाय (1973). आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास, पुस्तक सदन.

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1	3	3			3		2							3					2				1	

CO2	3	3	3	2	1		3							2			2		2				2	
CO3	3	3			2	1	1	1		1							2		1	3			3	
CO4	3	3			3																		1	

DSC	**आधुनिक पाश्चात्त्य दर्शन**	**पूर्णाङ्क : 100**
Paper Code HPI-C212	**Modern Western Philosophy**	**सत्रान्त परीक्षा : 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन : 40
		क्रेडिट : 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पाश्चात्त्य दर्शन में वर्णित आधुनिक पाश्चात्त्य दार्शनिकों द्वारा विचारे गये ज्ञानमीमांसीय एवं तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्तों का ज्ञान कराना है, जिससे विद्यार्थी ज्ञान व मूलतत्त्व से सम्बन्धित दार्शनिक चिंतन में प्रवीण हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि-

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई-I **बुद्धिवाद**

- डेकार्ट :- दर्शन की समस्या, ज्ञानमीमांसा, सन्देह की विधि, *'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ'*, द्रव्य की अवधारणा, ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण, मन- शरीर की समस्या।
- स्पिनोज़ा :- ज्ञानमीमांसा, द्रव्य की अवधारणा, गुण एवं पर्याय, ईश्वर एवं सर्वेश्वरवाद।
- लाइबनिज़ :- ज्ञानमीमांसा, चिदणु का सिद्धान्त, पूर्व-स्थापित सामञ्जस्य।

इकाई-II **अनुभववाद**

- लॉक :- जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन, ज्ञान सिद्धान्त, द्रव्य, प्राथमिक एवं द्वितीयक गुण।
- बर्कले :- ज्ञानमीमांसा, भौतिकवाद की आलोचना, *'सत्ता दृश्यता है'*, व्यक्तिपरक प्रत्ययवाद।
- ह्यूम :- अनुभववाद की परिणति, आध्यात्मिक तत्त्वों एवं कारणतावाद का खण्डन, सन्देहवाद।

इकाई-III **समीक्षावाद**

- कान्ट :- बुद्धिवाद और अनुभववाद की समीक्षा
- संश्लेषणात्मक प्रागानुभविक निर्णय, बुद्धि की कोटियाँ

- देश और काल
- प्रपञ्च एवं परमार्थ (फेनोमिना एवं नोमिना)।

इकाई-IV **प्रत्ययवाद**

- हेगेल :- द्वन्द्वात्मक विधि, निरपेक्ष प्रत्ययवाद।

UNIT-I **Rationalism**

- Descartes :- The Problem of Philosophy, Epistemology, Method of Doubt, *Cogito Ergo sum*, concept of Substance, Proofs for the Existence of God, Mind- Body Problem.
- Spinoza :- Epistemology, concept of Substance, Attribute and Mode, God and Pantheism.
- Leibniz :- Epistemology, Theory of Monads and Pre-established Harmony.

UNIT-IV **Empiricism**

- John Locke :- Refutation of Innate Ideas, Theory of Knowledge, Substance, Primary and Secondary Qualities.
- George Berkeley :- Epistemology, Criticism of Materialism, Esse-Est-Percipi and Subjective Idealism.
- David Hume :- Culmination of Empiricism, Refutation of Metaphysical Entities and Causality, Scepticism.

UNIT-V **Criticism**

- Immanuel Kant's Reconciliation of Rationalism and Empiricism.
- Synthetic A-priory Judgement, Categories of Reason.
- Space and Time.
- Phenomena and Noumena.

UNIT-IV **Idealism**

- Hegel: Dialectic Method, Absolute Idealism.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcomes)

- CO1- पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के ज्ञानमीमांसा सम्बन्धी बुद्धिवादी, अनुभववादी, समीक्षावादी एवं प्रत्ययवादी सिद्धान्तों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। यह पाठ्यक्रम ज्ञान के स्वरूप, स्रोत, एवं प्रमाणीकरण को स्पष्ट करने हेतु विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करेगा।
- CO2- आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिकों के तत्त्वमीमांसा सम्बन्धी विचारों को समझ सकेंगे। यह समझ विद्यार्थियों को जीवन और जगत् के मूलतत्त्व को समझने में सहायता प्रदान करेगा।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):

1. Durant, W. (1926). *A Story of Philosophy*, Simon & Schuster

2. Russell, B. (1987). *A History of Western Philosophy*, Union paper Backs, London.

3. Thilly F. (1975). *History of Western Philosophy*, Central Book Depot, Allahabad.

4. Stace, W.T. (1985) *A Critical History of Greek Philosophy*. Macmillan, Delhi,

5. Masih, Y. (1994) *A Critical History of Western Philosophy*, Motilal Banarasidas, Delhi.

6. सिंह, बी. एन. (1973). *पाश्चात्य दर्शन*. स्टूडेन्ट्स फ्रेन्ड्स एण्ड कम्पनी, वाराणसी.

7. दयाकृष्णा (1988). *पाश्चात्य दर्शन*. भाग – 1, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

8. शर्मा, सी. डी. (1992). *पाश्चात्य दर्शन*. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, नई दिल्ली.

9. श्रीवास्तव, जगदीश सहाय (1973). आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास, पुस्तक सदन.

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po1	PO 2	PO 3	P0 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1	3	3	3	3		1	1												2			1	1	
CO2	3	3			3		2							3					2			1	1	

SEC **Paper Code HPI-S211**	**शास्त्रार्थ – सिद्धान्त एवं परम्परा** **(सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)** **Shāstrārtha – Theory and Tradition (Theoretical & Practical)**	**पूर्णाङ्क :100** **सत्रान्त परीक्षा : 60** **सत्रीय मूल्याङ्कन : 40** **क्रेडिट : 04**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय दार्शनिक वाङ्मय में वर्णित शास्त्रार्थ-विद्या के सिद्धान्त एवं शास्त्रार्थ की परम्पराओं का सम्यक् ज्ञान प्रदान कराना है, जिससे वे अपने शैक्षणिक व सामाजिक जीवन में शास्त्रार्थ की विधि के द्वारा किसी भी तथ्य की यथार्थता की सम्यक् चर्चा करने में दक्ष हो सकेंगे। यह पाठ्यक्रम अवश्य ही विद्यार्थियों के संवाद-कौशल को परिष्कृत करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि-

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई – I परिचय

- शास्त्रार्थ का अर्थ एवं महत्त्व।
- शास्त्रार्थ का मूल उद्देश्य एवं शास्त्रार्थ की परम्परा, प्रमुख रूप – लिखित एवं मौखिक।
- शास्त्रार्थ के मुख्य पक्ष – पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष।
- वादी, प्रतिवादी एवं निर्णायक।

इकाई – II शास्त्रार्थ के प्रमुख तत्त्व

- तिस्र कथा :- वाद, जल्प एवं वितण्डा।
- प्रमाण :– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द।
- तर्क।

इकाई – III शास्त्रार्थ के प्रमुख उद्देश्य

- तत्त्वबोध।
- सत्य - असत्य और उचित - अनुचित का निर्णय।
- दार्शनिक, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार का साधन।

इकाई – IV शास्त्रार्थ-परम्परा

- प्राचीन भारतीय युग - उपनिषद् एवं सूत्र ग्रन्थ।
- मध्यकालीन - आचार्य शंकर एवं कुमारिल भट्ट।
- आधुनिक काल - महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द एवं स्वामी दर्शनानन्द।

Unit 1: Introduction

1. Meaning and importance of *Shastrartha,*
2. Ultimate aim of *Shastrartha* and Tradition of *Shastrartha,* Main type - Written and Testimonial
3. Main Aspects of *Shastrartha-Purvpaksha, Uttarpaksha.*
4. *Vadi, Prativadi* and Judge/Decision Maker.

Unit 2: Main Elements of *Shastrartha*

1. *Tisrah Katha- Vada, Jalp* and *Vitanda.*
2. *Pramanas- Pratyaksha, Anumana, Upamana* and *Shabda*.
3. *Tarka*.

Unit-3: Main Purposes of *Shastrartha*

1. Knowledge of Reality.
2. The Judgement of Truth-False and Right-Wrong.
3. The Mean of Philosophical, Religious and Social Reformation.

Unit- 4: Tradition of *Shastrartha*

1. Ancient Indian Age - *Upanishad* & *Sutra-Grantha*
2. Middle Period - *Acharya Shankar* & *Kumaril Bhatta*
3. Modern Period - *Maharshi Dayananda Sarswati, Swami Shradhhanand* & *Swami Darshnananda.*

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

CO1 – शास्त्रार्थ विधि के भारतीय सिद्धान्तों एवं शास्त्रार्थ की प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनिक परम्परा को समझ सकेंगे।

CO2- शास्त्रार्थ के प्रमुख तत्त्वों, उसके प्रकारों का वर्गीकरण कर एवं द्वन्द्वात्मक सहित अन्य विधाओं से इसके सम्बन्ध एवं भेद को स्पष्ट कर सकेंगे।

CO3 – किसी तथ्य के वास्तविकता के अन्वेषण के सम्बन्ध में वैचारिक मंथन हेतु शास्त्रार्थ विधि का प्रयोग कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings) :

1. न्यायसूत्र – वात्स्यायन भाष्य।
2. शास्त्री, उदयवीर **(2013).** *न्याय दर्शनम्.* गोविन्दराम हासानन्द
3. विद्यालंकार, सत्यकेतु – आर्यसमाज का इतिहास।
4. भारतीय, भवानीलाल – नवजागरण के पुरोधा।
5. आर्य, सोहनपाल सिंह**,** मार्क्स और ऋषि दयानन्द का समाज दर्शन – तुलनात्मक अध्ययन।
6. उपनिषद् अंक, कल्याण विशेषांक – गीता प्रेस गोरखपुर।
7. सरस्वती, दयानन्द (2015). सत्यार्थ प्रकाश, 83वाँ संस्करण, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली।
8. विद्यावाचस्पति, इन्द्र (2018). मेरे पिता, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली।
9. *दर्शनानन्द, स्वामी (2013). दर्शननान्द ग्रन्थ संग्रह,* (गोकुलप्रसाद दीक्षित, अनुवादक), वैदिक आर्य पुस्तकालय, बरेली।
10. Datta, D.M. (1972). *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta.
11. Hiriyanna, M. (1994). *Outlines of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
12. Hiriyanna, M. (2015). *The Essentials of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
13. Mohanty, J.N. (1992). *Reason and Tradition in Indian Thought,* Oxford: Clarendon Press. (2002)
14. Radhakrishnan, S. (1929). *Indian Philosophy, Volume 1-2*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London: George Allen and Unwin Ltd.

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	P O 2	P O 3	P0 4	P O 5	P O 6	P O 7	P O 8	P O 9	P O 10	P O 11	P O 12	P O 13	PO 14	PO 15	PS O1	PS O2	PS O3	PS O4	PS O5	PS O6	PS O7	PS O8	PS O 9
CO1	1	3	3	3	2	3	3	3	3					3			3		2	3			1	
CO2	1	3	3	3	2	3	3	3	3					3			3		2	3			1	
CO3	1	3	3	3	2	3	3	3	3					3			3		2	3			1	

DSC	**तृतीय सत्र – III Sem.**	**पूर्णाङ्क :100**
Paper Code HPI-C311	**भारतीय नीतिशास्त्र**	**सत्रान्त परीक्षा : 60**
	Indian Ethics	**सत्रीय मूल्याङ्कन : 40**
		क्रेडिट : 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में नीतिशास्त्रीय विषय वस्तु को रखा गया है। यह शास्त्र मानवीय जीवन के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस शास्त्र को लोक स्थिति का व्यवस्थापक माना गया है *(सर्वोपजीवकं लोकस्थितिकृन्नीतिशास्त्रकम्। शु.नी. 1/2)* तथा इसके अभाव में लोक व्यवहार की स्थिति को असंभव बताया गया है *(सर्वलोकव्यवहारस्थितिर्नीत्या विना नहि। शु.नी. 1/11)* इसके विद्या के भंग होने पर सम्पूर्ण जगत् के विनाश हो जाने का भी दावा शास्त्रों में मिलता है *(विपन्नायां नीतौ सकलमवशं सीदति जगत् – हितोपदेश – 2/75*)। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय दर्शनों की प्रमुख नैतिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को नैतिकता के विविध आयामों से परिचित कराना है, जिससे विद्यार्थी नैतिकता, न्याय, धर्म, उचित, शुभ आदि नैतिक प्रत्ययों तथा नैतिक सिद्धान्तों को सम्यक् प्रकार से समझ सके तथा नैतिक निर्णयों का निर्माण तथा नैतिक मूल्यांकन करने में प्रवीण हो सकें।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि-

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

प्रथम इकाई : नीतिशास्त्र का अर्थ, स्वरूप एवं क्षेत्र। भारतीय नीतिशास्त्र की प्रमुख विशेषताएं।
द्वितीय इकाई : ऋत् का सिद्धान्त, वैदिक कर्म सिद्धान्त, ऋणत्रय, श्रेय एवं प्रेय, पुरुषार्थ चतुष्टय।
तृतीय इकाई : संस्कार, धर्म का स्वरूप एवं धर्म के दस लक्षण, वर्णधर्म, आश्रम धर्म।
चतुर्थ इकाई : यम, पञ्चशील, पञ्चमहाव्रत, निष्काम कर्म।

Unit – 1: Meaing, Nature & Subject Matter of Ethics. Main features of Indian Ethics

Unit – 2: Concept *of Ṛta,* Vedic theory of *Karma,* Ṛnatraya, *Shreya & Preya*, Purushartha- Chatushtaya.

Unit – 3: Samskar, Nature of *Dharma* & ten Characteristics of *Dharma. Varnadharma, Ashramadharma.*

Unit – 4: *Yama, Panchshila, Panchmahavrat, Niṣkāma-Karma.*

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 - नीतिशास्त्र के अर्थ, स्वरूप एवं विषय-वस्तु का स्पष्ट बोध एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 – भारतीय दर्शन के विविध नैतिक अवधारणाओं का बोध एवं स्पष्ट व्याख्या कर सकेंगे।
- CO3 – मानवीय आचरणों एवं चरित्र का भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण से सम्यक् मूल्यांकन करने में समर्थ हो सकेंगे।

सन्दर्भ एवं सहायक ग्रन्थ सूची :.

1- पाण्डेय, संगल लाल (1981). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण. सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद

2. योगसूत्र, गीताप्रेस, गोरखपुर ।

3- लौगाक्षिभास्कर, अर्थसंग्रह .

4. श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर ।

5- वर्मा, अशोक (2005). *नीतिशास्त्र की रूपरेखा*. मोतीलाल बनारसीदास

6- कुमार, सुरेन्द्र (भाष्य). मनुस्मृति.

7- Prasad, R. (1989): *Karma*, *Causation and Retributive Morality*, ICPR, New Delhi.

8- Sharma, I.C., (1965) *Ethical Philosophies of India*, London: George Allen and Unwin Ltd.

9- Goodman, Charles. (2009), *Consequences of Compassion: An Introduction and Defense of Buddhist Ethics*, New York: Oxford University Press.

10- Radhakrishnan, S. (1929) *Indian Philosophy, Volume 1*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London: George Allen and Unwin Ltd.

11- Radhakrishnan, S. and Moore, C. A. (1967) *A Sourcebook in Indian Philosophy*, Princeton.

12- Raju, P.T. (1985) *Structural Depths of Indian Thought,* Albany, NY: State University of New York Press.

13- Sharma, C.D (2000), *A Critical Survey of Indian Philosophy*, Motilal Banarasidas,

14- वेदालंकार, जयदेव, भारतीय दर्शन की समस्याएं, प्राच्यविद्या शोध प्रकाशन, हरिद्वार।

Mapping of Course Outcomes with Program Outcomes & Program Specific Outcomes

Cos	Po1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PSO 9
CO1		3								3	3	3	3	1		3		3	2		2	3	1	1
CO2		3								3	3	3	3	1		3		3	2		2	3	2	1
CO3		3								3	3	3	3	1		3		3	2		2	3	2	1

सत्र - तृतीय

Semester – III

DSC
Paper Code HPI-C312

पाश्चात्त्य नीतिशास्त्र
Western Ethics

पूर्णाङ्क 100
सत्रान्त परीक्षा - 60
सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में नीतिशास्त्रीय विषय वस्तु को रखा गया है। इस शास्त्र का महत्त्व मानवीय जीवन के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस शास्त्र को लोक स्थिति का व्यवस्थापक माना गया है *(सर्वोपजीवकं लोकस्थितिकृन्नीतिशास्त्रकम्। शु.नी. 1/2)* तथा इसके अभाव में लोक व्यवहार की स्थिति को असंभव बताया गया है *(सर्वलोकव्यवहारस्थितिर्नीत्या विना नहि। शु.नी. 1/11)* इसके विद्या के भंग होने पर सम्पूर्ण जगत् के विनाश हो जाने का भी दावा शास्त्रों मिलता है *(विपन्नायां नीतौ सकलमवशं सीदति जगत् – हितोपदेश – 2/75)*। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में उक्त अतिमहत्वपूर्ण शास्त्र से सम्बन्धित प्राचीन व आधुनिक पाश्चात्त्य नैतिक मान्यताओं, सिद्धान्तों एवं नैतिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को नैतिकता के विविध आयामों को से परिचित कराना है, जिससे विद्यार्थी नैतिकता, न्याय, धर्म, उचित, शुभ आदि नैतिक प्रत्ययों तथा नैतिक सिद्धान्तों को सम्यक् प्रकार से समझ सके तथा नैतिक निर्णयों के निर्माण तथा नैतिक मूल्यांकन करने में प्रवीण हो सकें।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई-I - परिचय

- नीतिशास्त्र का अर्थ, स्वरूप, विषय-वस्तु एवं उपयोगिता।
- नीतिशास्त्र की शाखाएं – मानकीय नीतिशास्त्र, अधिनीतिशास्त्र, सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र एवं अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र।
- सम्बन्ध – नीतिशास्त्र और समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र और राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र और मनोविज्ञान, नीतिशास्त्र और धर्मशास्त्र।

इकाई – II - नैतिक प्रत्यय

- नैतिक प्रत्यय का अर्थ एवं स्वरूप।

- मौलिक नैतिक प्रत्यय – शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित, कर्त्तव्य-निषिद्ध कर्म, सद्गुण-दुर्गुण, न्याय-अन्याय।

इकाई-III - नैतिकता की आवश्यक मान्यताएं।

- व्यक्तित्व, विवेक, संकल्प स्वातन्त्र्य।
- आत्मा की अमरता, ईश्वर का अस्तित्व।
- नियतिवाद।

इकाई – IV - नैतिक मानदण्ड

- नैतिक मानदण्ड का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकार।
- नियमवाद : 1. बाह्य नियमवाद – राजकीय नियम, सामाजिक नियम, धार्मिक या ईश्वरीय नियम। 2. आन्तरिक नियमवाद – नैतिक इन्द्रियवाद, रसेन्द्रियवाद, तर्कवाद तथा बुद्धिवाद।
- हेतुवाद ; सुखवाद – स्वार्थमूलक सुखवाद, परार्थमूलक सुखवाद, उपयोगितावाद, बुद्धिमूलक उपयोगितावाद, आदर्शवादी उपयोगितावाद, विकासात्मक सुखवाद। आत्मपूर्णतावाद।

Unit – 1 – Introduction

- Meaning, Nature, Subject-Matter and Importance of Ethics.
- Branches of Ethics – Normative Ethics, Metaethics, Virtue Ethics, Applied Ethics.
- Relation – Ethics and Sociology, Ethics & Politics, Ethics & Psychology, Ethics & Religion/Theology.

Unit – 2 – Ethical Concepts.

- Meaning and Nature of Ethical Concepts.
- Fundamental Ethical Concepts – Good - Evil, Right - Wrong, Duty and Prohibited Action, Virtue – Vice, Justis – Injustice.

Unit – 3 - Postulates of Moral Judgment.

- Personality, Reason, Free Will.
- Immortality of Soul and Existence of God.
- Determinism.

Unit – 4 – Moral Standards or Moral Norms.

- Meaning, Nature and Kinds of Moral Norms.

- Theory of Moral Law; 1. External Law – Political Law, Social Law, Divine Law. 2. Internal Law – Moral Sense Theory, Aesthetic Sense Theory, Dianoetic Theory and Rationalism.
- Teleological Theory; Hedonism – Egoistic Hedonism, Altruistic Hedonism, Utilitarianism, Rational Utilitarianism, Ideal Utilitarianism, Evolutional Hedonism. Perfectionism.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 - नीतिशास्त्र के अर्थ, स्वरूप एवं विषय-वस्तु का स्पष्ट बोध एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 – नैतिक प्रत्ययों एवं निर्नैतिक प्रत्ययों में स्पष्ट अन्तर करने में समर्थ हो सकेंगे।
- CO3 - प्राचीन व आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के प्रमुख नैतिक सिद्धान्तों को समझ सकेंगे तथा उनकी समीक्षात्मक व्याख्या कर सकेंगे।

Recommended Readings:

- Aristotle, (1926) *Nichomachian Ethics*, Harvard University Press.
- Hartmann, N. (1950) *Moral Phenomena,* New Macmillan.
- Kant, Immanuel: *Groundwork of the Metaphysics of Morals*, Trans. H J Paton, as The Moral Law. London.
- Mill, JS (1863): *Utillitarianism*, London, in Mary Warnock. Ed.1962
- Gowans, Christopher W. (2015), *Buddhist Moral Philosophy: An Introduction*, New York - London, Routledge
- वर्मा, वेद प्रकाश (1994). *नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त,* 4वाँ संस्करण .ऍलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड
- वर्मा, वेद प्रकाश (1995). *अधनीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धान्त.* द्वितीय संस्करण. ऍलाइड पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड.
- दयाकृष्णा (1988). *पाश्चात्य दर्शन.* भाग – 1-2, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
- वर्मा, अशोक कुमार (2005). *नीतिशास्त्र की रूपरेखा.* मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली।
- पाण्डेय, संगम लाल (1991). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण. सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

Mapping of Course Outcomes with Program Outcomes & Program Specific Outcomes

Cos	Po1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PSO 9
CO1		3								3	3	3	3	1		3		3	3		2	3	1	1

CO2		3								3	3	3	3	1		3		3	3		2	3	2	1
CO3		3								3	3	3	3	1		3		3			2	3	2	1

सत्र - तृतीय

Semester – III

DSC	**नैतिक निर्णय निर्माण**	**पूर्णाङ्क 100**
Paper Code HPI-C313	**ETHICAL DECISION MAKING**	**सत्रान्त परीक्षा - 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
		क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

प्रस्तुत पाठ्यक्रम में 'नैतिक निर्णय निर्माण' से सम्बन्धित अनिवार्य नैतिक अवधारणाओं के अध्ययन को रखा गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करना है। इस पाठ्यक्रम का सम्यक् पूर्वक अध्ययन करके विद्यार्थी मानवीय आचरण एवं चरित्र के सम्बन्ध में नैतिक निर्णय करने की कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई – I नैतिक अवधारणा और नैतिक दृष्टिकोण

1. मूल्य, दुविधा और वरण
2. उत्तरदायित्व, न्याय और निष्पक्षता
3. स्वयं और अन्य के प्रति समादर

इकाई-II - नैतिक निर्णय का विषय

1. ऐच्छिक कर्म, आचरण एवं चरित्र।
2. इच्छा, प्रयोजन, अभिप्राय एवं परिणाम।
3. साधन एवं साध्य सम्बन्धी नैतिक विवाद।

इकाई – III – नैतिक निर्णय प्रक्रिया

1. नैतिक संहिताएं और कसौटियाँ।
2. नैतिक निर्णय के सोपान।

3. समस्या विशेष के अध्ययन में परिस्थितियों की भूमिका।

UNIT I: Ethical Concepts & Ethical Approaches

1. Values, Dilemma and Choices
2. Responsibility, Justice - Fairness
3. Respect for Self and Others

UNIT II: **Major Elements of Moral Judgments**

1. Voluntary Actions, Conduct, Character.
2. Desire, Motive, Intension and End.
3. Ethical Dispute of 'Means' and 'End'.

UNIT III: Ethical Decision Process

1. Ethical Codes and Tests
2. Steps to Ethical Decision-Making
3. Case Studies and Situational Role Plays

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 - नैतिक निर्णयन के हेतु अनिवार्य तत्त्वों का बोध एवं समीक्षा कर सकेंगे।
- CO2 – सामान्य एवं विशिष्ट परिस्थितियों में मानवीय आचरणों एवं चरित्र के सम्बन्ध में नैतिक निर्णय एवं सम्यक् मूल्यांकन करने में समर्थ हो सकेंगे।

Recommended Readings:

- Blanchard, K., - Peale, N.V. (1988) *The Power of Ethical Management*, New York: William Morrow and Co. pp. 20-24. http://www.blanchardbowleslibrary.com/books/powerofethicalmanagement.htm
- Brown, M. (1996) *The Quest for Moral Foundations: An Introduction to Ethics* Georgetown University Press
- Davis, M. (1999) *Ethics and The University*, New York: Routledge.
- Heller, R. (1998) *Making Decisions*, New York: DK.
- Josephson, M. S. (2002) *Making Ethical Decisions*, Josephson Institute of Ethics.
- Kardasz, F. (2008) *Ethics Training For Law Enforcement: Practices and Trends,* VDM Verlag Dr. Müller.
- Nosich, G. M. (2002*) Learning to Think Things Through: A Guide to Critical Thinking*, Prentice Hall.
- D. Guha (2007). *Practical And Professional Ethics,* vol. 1-6, Concept

Publishing Company, New Delhi

- वर्मा, वेद प्रकाश (1994). *नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त*, 4वाँ संस्करण .ऍलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड
- वर्मा, वेद प्रकाश (1995). *अधनीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धान्त*. द्वितीय संस्करण. ऍलाइड पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड.
- वर्मा, अशोक कुमार (2005). *नीतिशास्त्र की रूपरेखा*. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, नई दिल्ली।
- **जटाशंकर, अम्बिकादत्त शर्मा, कंचन सक्सेना, शैलेश कुमार सिंह, दिलिप चारण , *"अनुप्रयुक्त दर्शन तथा नीतिशास्त्र के आयाम"* , न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन,।**
- पाण्डेय, संगम लाल (1991). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण. सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

Mapping of Course Outcomes with Program Outcomes & Program Specific Outcomes

Cos	Po1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PSO 9
CO1		3								3	3	3	3	1		3		3	3	3	2	3	1	1
CO2		3								3	3	3	3	1		3		3	3	3	2	3	2	1

सत्र - तृतीय

Semester – III

DSC	**दार्शनिक प्रविधि**	**पूर्णाङ्क 100**
Paper Code HPI-G311	**Philosophical Method**	**सत्रान्त परीक्षा - 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
		क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

प्रस्तुत पाठ्यक्रम में 'दार्शनिक प्रविधि' को अध्ययन का विषय बनाया गया है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को दार्शनिक समस्याओं के निदान हेतु प्रयोग में लाये जाने वाले विविध दार्शनिक प्रविधियों का ज्ञान देना है। यह पाठ्यक्रम अवश्य ही विद्यार्थियों के दार्शनिक चिंतन की दिशा को व्यवस्थित करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा, जिससे विद्यार्थी एक समुचित व्यवस्था में दार्शनिक समस्याओं को देखने एवं उसका दार्शनिक तकनीक से समाधान करने में प्रवीण हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई – 1 परिचय

- दार्शनिक प्रविधि का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा।
- दार्शनिक प्रविधि का प्रयोग एवं महत्त्व।

इकाई – 2 दार्शनिक प्रविधियाँ – I

- आगमनात्मक एवं निगमानात्मक।
- सन्देहात्मक प्रविधि
- द्वन्द्वात्मक प्रविधि
- अवधारणापरक विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक प्रविधि।
- समीक्षात्मक प्रविधि

तृतीय – 3 : दार्शनिक प्रविधियाँ – II

- सामान्य समझ
- अर्थक्रियावादी प्रविधि
- सत्यापनीयता के निकष
- संवृतिशास्त्रीय प्रविधि
- साधारण भाषा दर्शन की प्रविधि
- प्रयोगात्मक दर्शन की प्रविधि

इकाई – 4 : भारतीय दर्शन की प्रमुख दार्शनिक प्रविधियाँ

- प्रत्यक्ष
- अनुमान
- शब्द
- उपमान

UNIT I – Introduction

- Meaning, Nature and Definitions of Philosophical Method.
- Uses and Importance of Philosophical Method.

UNIT II – Philosophical Methods - I

- Inductive & Deductive,
- Methodological Skepticism,
- Dialectical Method,
- Conceptual Analysis & Synthesis Method.
- Critical Method

UNIT III – Philosophical Methods - II

- Common Sense,
- Pragmatic Method,
- Criterion of Verifiability,
- Phenomenological Method,
- Method of Ordinary language Philosophy,
- Method of Experimental Philosophy

Unit – IV – Major Philosophical Methods in Indian Philosophy

- *Pratyaksh*
- *Anuman*
- *Shabda*
- *Upman*

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcomes)

- CO1- दार्शनिक प्रविधि को समझ सकेंगे एवं उसका समुचित प्रयोग कर सकेंगे।
- CO2 – किसी दार्शनिक समस्या का समाधान व्यवस्थित रूप से दार्शनिक अनुशासन में कर सकेंगे।

Recommended Readings:

- Dever, Josh (19 May 2016). "What is Philosophical Methodology?". In Cappelen, Herman; Gendler, Tamar Szabó; Hawthorne, John (eds.). *The Oxford Handbook of Philosophical Methodology*. pp. 3–24. doi:10.1093/oxfordhb/9780199668779.013.34. ISBN 978-0-19-966877-9.Daly, Chris (2015). "Introduction and Historical Overview". *The Palgrave Handbook of Philosophical Methods*. Palgrave Macmillan UK. pp. 1–30. doi:10.1057/9781137344557_1. ISBN 978-1-137-34455-7.
- Smith, Joel. "Phenomenology". *Internet Encyclopedia of Philosophy*. Retrieved 10 October 2021.
- Malachowski, Alan (1 September 1993). "Methodological scepticism, metaphysics and meaning". *International Journal of Philosophical Studies*. **1** (2): 302–312. doi:10.1080/09672559308570774. ISSN 0967-2559
- Smith, David Woodruff (2018). "Phenomenology: 1. What is Phenomenology?". *The Stanford Encyclopedia of Philosophy*. Metaphysics Research Lab, Stanford University. Retrieved 20 September 2021.
- Daly, Chris (2015). "Introduction and Historical Overview". *The Palgrave Handbook of Philosophical Methods*. Palgrave Macmillan UK. pp. 1–30. doi:10.1057/9781137344557_1. ISBN 978-1-137-34455-7.
- Misak, C.J. (1995). "Introduction". *Verificationism: Its History and Prospects*. ISBN 9780415125987.
- Eder, Anna-Maria A.; Lawler, Insa; van Riel, Raphael (1 March 2020). "Philosophical methods under scrutiny: introduction to the special issue philosophical methods". *Synthese*. **197** (3): 915–923. doi:10.1007/s11229-018-02051-2. ISSN 1573-0964. S2CID 54631297.
- SHAFFER, MICHAEL J. (2015). "The Problem of Necessary and Sufficient Conditions and Conceptual Analysis". *Metaphilosophy*. **46** (4/5): 555–563. doi:10.1111/meta.12158. ISSN 0026-1068. JSTOR 26602327. S2CID 148551744.
- REYNOLDS, JACK (4 August 2010). "Common Sense and Philosophical Methodology: Some Metaphilosophical Reflections on Analytic Philosophy and Deleuze". *The Philosophical Forum*. **41** (3): 231–258. doi:10.1111/j.1467-9191.2010.00361.x. hdl:10536/DRO/DU:30061043. ISSN 0031-806X.
- Parker-Ryan, Sally. "Ordinary Language Philosophy". *Internet Encyclopedia of Philosophy*. Retrieved 28 February 2022.
- Bawden, H. Heath (1904). "What is Pragmatism?". *The Journal of Philosophy, Psychology and Scientific Methods*. **1** (16): 421–427. doi:10.2307/2011902. ISSN 0160-9335. JSTOR 2011902.
- Knobe, Joshua; Nichols, Shaun (2017). "Experimental Philosophy". *The Stanford Encyclopedia of Philosophy*. Metaphysics Research Lab, Stanford University. Retrieved 1 March 2022.
- "Socrates - Plato". *www.britannica.com*. Retrieved 1 March 2022.
- शास्त्री, उदयवीर **(2013).** *न्याय दर्शनम्.* (विद्योदय भाष्य)**,** गोविन्दराम हासानन्द**.** दिल्ली

Mapping of Course Outcomes with Program Outcomes & Program Specific Outcomes

Cos	Po1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PSO 9
CO1		3	3	3	3	3	3										3		3		3	3	3	1
CO2		3	3	3	3	3	3										3		3		3	3	3	1

सत्र - चतुर्थ
Semester – IV

DSC	**भारतीय तर्कशास्त्र**	**पूर्णाङ्क 100**
Paper Code HPI-C411	**Indian Logic**	**सत्रान्त परीक्षा - 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
		क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

प्रस्तुत पाठ्यक्रम में भारतीय तर्कशास्त्र से सम्बन्धित तार्किक युक्तियों एवं सिद्धान्तों के अध्ययन को रखा गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय तार्किक युक्तियों एवं सिद्धान्तों का बोध कराना तथा तार्किक निर्णयों के सत्यता एवं वैधता को सिद्ध करने में दक्षता प्रदान करना है।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

प्रथम इकाई . भारतीय तर्कशास्त्र - स्रोत एवं स्वरूप, न्याय का अर्थ, भारतीय तर्कशास्त्र के रूप में न्याय दर्शन का अध्ययन, ज्ञान-प्रक्रिया के प्रमुख तत्त्व, तिस्र कथा. वाद, जल्प एवं वितण्डा।

द्वितीय इकाई . प्रमाण का अर्थ, उद्देश्य एवं प्रकार. प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द प्रमाण।

तृतीय इकाई . हेतु की कसौटियाँ, हेत्वाभास का अर्थ एवं उसके भेद, तर्क का स्वरूप, संशय का स्वरूप एवं प्रकार, तर्कशास्त्र में संशय एवं तर्क की भूमिका,

चतुर्थ इकाई . प्रयोजन, निर्णय, सिद्धान्त का अर्थ एवं उसके भेद, छल का स्वरूप एवं प्रकार।

पंचम इकाई . साधर्म्य-वैधर्म्य, व्याप्ति का अर्थ एवं प्रकार, उपाधि, व्याप्तिग्रहोपाय, जाति, निग्रहस्थान, अनुमान के विविध प्रयोग।

Ist Unit- Indian Logic- Source and Nature, Meaning of Nyaya, Study of Nyaya Philosophy as Indian Logic, Main Elements of Knowledge Process, Tisra Katha- Vada, Jalp and Vitanda.

2nd Unit- Meaning of Pramana, Object and Type- Pratyaksha, Anumana, Upamana, Shabda Pramana.

3rd Unit- Criterion of Hetu, Meaning of Hetvabhasa and its kinds, Nature of Tark, Nature of Sanshaya and its kinds, Role of Tark and Sanshaya in Logic.

4th Unit- Prayojana, Nirnaya, Meaning of Siddhant and its kinds, Nature of Chhala and its kinds,

5th Unit- Sadharmya- Vaidharmya, Meaning of Vyapti and its kinds, Upadhi, Vyaptigrahopaya, Jati, Nigrahasthana, Different uses of Anumana.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 - विद्यार्थी तर्क के भारतीय प्रविधियों का बोध एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 - तार्किक युक्ति का निर्माण करके किसी कथन की वैधता सुनिश्चित करने में दक्ष हो सकेंगे।
- CO3 - प्रतीकों के माध्यम से व्यापक तार्किक संरचनाओं को सीमित कर सरलतापूर्वक उनकी तार्किक परीक्षा कर सकेंगे।
- CO4 - सत्य तर्क एवं असत्य तर्क में अन्तर करने में दक्ष हो सकेंगे।

सन्दर्भ एवं सहायक ग्रन्थ सूची :.

- मिश्र, केशव . *तर्कभाषा*
- शास्त्री, उदयवीर **(2013).** *न्याय दर्शनम्.* गोविन्दराम हासानन्द
- सिंहा, नीलिमा(2016). *भारतीय ज्ञानमीमांसा.* मोतीलाल बनारसीदास
- Dasgupta, S.N. (2004), *A History of Indian Philosophy*, vol.1, Delhi, Motilal Banarasidass Publishers, Pvt. Ltd.
- Radhakrishnan, S. (1929), *Indian Philosophy*, Volume 1-2,

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1		3		2		3	3	3	3								3		3	3		3	2	
CO2		3		2		3	3	3	3								3		3	3		3	2	
CO3		3		2		3	3	3	3								3		3	3		3	2	
CO4		3		2		3	3	3	3								3		3	3		3	2	

सत्र - चतुर्थ
Semester – IV

DSC	**पाश्चात्त्य तर्कशास्त्र**	**पूर्णाङ्क 100**
Paper Code HPI-C412	**Western Logic**	**सत्रान्त परीक्षा - 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
		क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में तर्क के पाश्चात्त्य प्रविधियों को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को पाश्चात्त्य दर्शन के तार्किक सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं का सम्यक् ज्ञान प्रदान करना है एवं विद्यार्थियों को पाश्चात्त्य तर्क विद्या में दक्ष बनाना है।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई I: तर्कशास्त्र की प्राथमिक अवधारणाएं

1. तर्कवाक्य और वाक्य
2. निगमनात्मक और आगमनात्मक युक्तियाँ
3. सत्यता, वैधता और संपुष्टि

इकाई II: परम्परागत तर्कशास्त्र

1. पद और पदों की व्याप्ति
2. निरपेक्ष तर्कवाक्य
3. परम्परात्मक विरोध.वर्ग और सत्तात्मक तात्पर्य
4. साधारण भाषा के वाक्यों को मानक आकार में परिवर्तित करना
5. अव्यवहित अनुमान - परिवर्तन, प्रतिवर्तन और प्रति.परिवर्तन
6. निरपेक्ष न्यायवाक्य - आकृति और अवस्था
7. न्यायवाक्यीय नियम और दोष
8. वेन.आरेख

इकाई III: प्रतीकात्मकता

1. सत्यता फलन के प्रकार (निषेध, संयोजन, विकल्प, हेतु.हेतुमत्)
2. कथन, कथन के आकार और तार्किक अभिकथन
3. निर्णय प्रणाली : सत्यता सारिणी की पद्धति और तर्क को असिद्ध करना

इकाई IV: अनौपचारिक तर्कदोष

(आई०एम० कोपी के पुस्तक ''Introduction to logic '',14th ed. के अनुसार)

UNIT I: Basic Logical Concepts

1. Proposition and Sentence
2. Deductive and Inductive Arguments
3. Truth, Validity and Soundness

UNIT II: Traditional Logic

1. Terms and Distribution of Terms.
2. Categorical Propositions.
3. Traditional Square of Opposition and Existential Import.
4. Translating Ordinary Language Sentences into Standard Form.
5. Immediate Inference – Conversion, Obversion and Contraposition.
6. Categorical Syllogism: Figure and Mood
7. Syllogistic Rules and Fallacies
8. Venn-Diagram

UNIT III: Symbolization

1. Types of Truth Functions (Negation, Conjunction, Disjunction (Alternation), Conditional.
2. Statements, Statement Forms and Logical Status.
3. Decision Procedures: Truth Table Method and *Reductio Ad Absurdum*.

UNIT IV: Informal Fallacies

(As given in I. M. Copi, 14th ed.)

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 - विद्यार्थी तर्क के पाश्चात्य प्रविधियों का बोध एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 - तार्किक युक्ति का निर्माण करके किसी कथन की वैधता सुनिश्चित करने में दक्ष हो सकेंगे।
- CO3 - प्रतीकों के माध्यम से व्यापक तार्किक संरचनाओं को सीमित कर सरलतापूर्वक उनकी तार्किक परीक्षा कर सकेंगे।
- CO4 - सत्य तर्क एवं असत्य तर्क में अन्तर करने में दक्ष हो सकेंगे।

Prescribed Texts:

- Basson, A. H. and O'Connor, D. J. (1960) *An Introduction to Symbolic Logic*, Free Press. **I**
- Copi, I. M. (2010) *Introduction to Logic* (14th ed) New Delhi: Prentice Hall of India **हिन्दी अनुवाद. पाण्डेय, डॉ० संगमलाल, *तर्कशास्त्र का परिचय* , ।**
- वर्मा, अशोक कुमार (1999). *प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र प्रवेशिका*. मोतीलाल बनारसीदास।
- वर्मा, अशोक कुमार (2005). *सरल निगमन तर्कशास्त्र*. मोतीलाल बनारसीदास।

- तिवारी, अविनाश (2014). तर्कशास्त्र के सिद्धान्त. सरस्वती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- जायसवाल, अरविन्द & सिंह नीति (2019). तर्कशास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्त. वर्तनी पब्लिकेशन, इलाहाबाद।

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1		3		2		3	3	3	3								3		3	3			2	
CO2		3		2		3	3	3	3								3		3	3			2	
CO3		3		2		3	3	3	3								3		3	3			2	
CO4		3		2		3	3	3	3								3		3	3			2	

सत्र - चतुर्थ
Semester – IV

DSC
Paper Code HPI-C412

विज्ञान का दर्शन
Philosophy of Science

पूर्णाङ्क 100
सत्रान्त परीक्षा - 60
सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में दर्शन के वैज्ञानिक पक्ष के अध्ययन को रखा गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को जीवन एवं जगत् से सम्बन्धित विज्ञान के विविध आयामों के दार्शनिक अवधारणाओं से परिचित कराना एवं उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना है।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

प्रथम इकाई – **विज्ञान एवं दर्शन**

- विज्ञान का दर्शन – अर्थ, स्वरूप, विषय वस्तु एवं महत्त्व।
- विधियाँ–1. वैज्ञानिक विधियाँ – प्रयोग एवं सर्वेक्षण, 2. दार्शनिक विधियाँ – आगमनात्मक एवं निगमनात्मक।

द्वितीय इकाई – सत् की वैज्ञानिक एवं दार्शनिक अवधारणा

- ब्रह्माण्ड का मूल स्वरूप एवं उत्पत्ति प्रक्रिया – वैज्ञानिक एवं पाश्चात्त्य एवं भारतीय दार्शनिक सिद्धान्त।
- जीवन उत्पत्ति सिद्धान्त – सृजनात्मक एवं विकासात्मक।
- देश – काल, सापेक्षता की अवधारणा
- परा-भौतिक तत्त्व – ईश्वर एवं आत्मा।

तृतीय इकाई – सत्य एवं प्रमाणीकरण के प्रमुख सिद्धान्त

- संसक्तावाद, संवादितावाद, यथार्थवाद, अस्तित्त्ववाद, अर्थ एवं संदर्भ सिद्धान्त।
- सैद्धान्तिक एवं आनुभविक तथ्यों के बीच सम्बन्ध (निगमन एवं आगमन)
- भारतीय प्रमाण मीमांसा – प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द।
- पञ्च परीक्षा, प्रमाण सम्प्लव, प्रमाण व्यवस्था

चतुर्थ इकाई - विज्ञान नीति एवं नैतिकता

- सत्यनिष्ठा एवं समष्टि हित का सामंजस्य।
- प्रौद्योगिकी विकास एवं मानव का भविष्य।
- विकास बनाम पर्यावरण।

- नाभिकीय शक्ति के विकास की दिशा एवं विश्व शान्ति एवं स्थायित्व का प्रश्न।

UNIT – I Philosophy & Science.

- Philosophy of Science - Meaning, Nature, Subject Matter & Importance.
- Methodologies - 1- Scientific Method – Experiments & Observation, 2. Philosophical Methods – Inductive & Deductive.

UNIT – II Scientific and Philosophical Concept of Reality

- Origin and Nature of Universe – Scientific and Indian & Western Philosophical Theory.
- Origin of Life - Creation Theory & Evolution Theory.
- Space - Time & Concept of Relativity
- Concepts of Super Nature – God & Soul

UNIT – IV Major Theories of Truth and Verification

- Coherence, Correspondence, Pragmatic, Existentialism, Meaning and Reference,
- Relation between Theory and Empirical data (Deductive & Inductive)
- Indian Epistemology – Perception, Inference, Comparison & Testimony.
- *Panch- Pariksha*, *Pramana Samplava, Pramana Vyavastha.*

UNIT – IV Science Policy and morality

- Harmony of Honesty and Universal Well-Being,
- Technological Developments and Human's Future
- Developments Vs Environment
- Way of the Development of Atomic Power and Problems of world Peace and Surviving.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 – जीवन एवं जगत् से सम्बन्धित वैज्ञानिक एवं दार्शनिक अवधारणाओं का बोध एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 – विज्ञान एवं दर्शन के सह-सम्बन्ध को समझ सकेंगे।
- CO3 - विज्ञान के दार्शनिक पक्षों को एवं दर्शन के वैज्ञानिक पक्षों का सम्यक् अवबोध कर सकेंगे।
- CO4 - वैज्ञानिक विकास के दिशा का नैतिक मूल्यांकन कर सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची.

1- D. Guha (2007). *Practical And Professional Ethics,* vol. 1-6, Concept Publishing Company, New Delhi.
2- Hosper, John (1956). *An Introduction to Philosophical Analysis*, Routledge & Kegan Paul Ltd. London.
3- James, W. (2020). Pragmatism. In *Pragmatism* (pp. 53-75). Routledge.
4- Jeans, James (1948). The Mysterious Universe. Cambridge University Press
5- Patrick, J. T. W. (1935). *An Introduction to Philosophy.* Houghton Mifflin Co. New York.
6- Reichenbach, Hans (1959). *The Rise of Scientific Philosophy*. University of California Press.
7- Ritchie, Arthur David (1923). *Scientific Method: An Inquiry into the Character and Validity of Natural Laws.* Routledge, New York.
8- सिद्धान्तालंकार, सत्यव्रत (1975). वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली.
9- गुरुदत्त (2012). *विज्ञान और विज्ञान.* हिन्दी साहित्य सदन, नई दिल्ली.
10- गुरुदत्त (2017). *सायंस और वेद.* हिन्दी साहित्य सदन, नई दिल्ली.
11- रुबिचेक, पॉल (1973) *अस्तित्ववाद : पक्ष और विपक्ष.* प्रभाकर माचवे (अनु.), मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल.
12- शास्त्री, उदयवीर **(2013).** *न्याय दर्शनम्.* गोविन्दराम हासानन्द

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1	3	3	3	2	3	2	1		2					3			3		1	3		2	2	
CO2	3	3	3	2	3	2	1		2					3			3		1	3		2	2	
CO3	3	3	3	2	3	2	1		2					3			3		1	3		2	2	
CO4	3	3	3	2	3	2	1		2					3			3		1	3		2	2	

सत्र - चतुर्थ
Semester – IV

DSC	**प्रबन्धन का दर्शन**	**पूर्णाङ्क 100**
Paper Code HPI-C412	**Philosophy of Management**	**सत्रान्त परीक्षा - 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
		क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में प्रबन्धन के दार्शनिक आयामों के अध्ययन को रखा गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को प्रबन्धन के दार्शनिक अवधारणाओं से परिचित कराना एवं उनमें दार्शनिक प्रबन्धन के कौशल को विकसित करना है।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

प्रथम इकाई. परिचय

- प्रबन्धन का दर्शन – अर्थ, परिभाषा एवं प्रकृति
- प्रबन्धन के कार्य एवं प्रमुख सिद्धान्त
- प्रबन्धक के प्रमुख गुण।

द्वितीय इकाई. **प्रबन्धन के प्रमुख प्रकार**

- आत्म प्रबन्धन
- समुदाय प्रबन्धन
- समाज प्रबन्धन
- व्यवसाय प्रबन्धन
- प्रबन्धन में नैतिक सद्गुणों की भूमिका।

तृतीय इकाई. **प्रमुख नैतिक सदगुण**

- वेद, उपनिषद् एवं भगवद्गीता ।
- सुकरात, प्लेटो, अरस्तु एवं काण्ट।

चतुर्थ इकाई. प्रमुख आधुनिक दार्शनिक और प्रबन्धन मूलक दृष्टिकोण.

- भारतीय – दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गांधी, बी0 आर0 अम्बेडकर
- पाश्चात्य – हुसर्ल, सार्त्र, कार्ल मार्क्स ।

पंचम इकाई. प्रबन्धन की प्रमुख व्यावहारिक समस्याएँ

- विकास की चुनौती
- तनाव प्रबन्धन की समस्या
- प्रमुख दार्शनिक समाधान - वेद, योगदर्शन, भगवद्गीता एवं बौद्धदर्शन ।

Unit 1 :- Introduction

- Philosophy of Management - Meaning, Definition and Nature
- Function and Main Principal of Management
- Main qualities/Virtues of A Manager.

Unit 2 :- Major Types of Management

- Self-Management
- Group management
- Society management
- Professional management.
- The role of Ethical manners in management.

Unit-3 :- Major Moral Virtues

- Vedas, Upnishadas and Bhagvad Gita
- Plato, Aristotle and Kant

Unit- 4 :- Main Modern Philosophers & Their View Point of Management

- Indian - Dayananda Saraswati, Swami Shraddhananda, Mahatma Gandhi, B.R. Ambedkar
- Western - Husserl, Sartre, Karl Marx.

Unit- 5: Major Practical Problems of Management

- The Challenge of Development
- Problem of Stress Management

- Main Philosophical Solutions – Veda, Philosophy of Yoga, *Bhagavad-Gita*, and Buddhist Philosophy.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 – प्रबन्धन के दार्शनिक दृष्टिकोण एवं उनके महत्त्व का बोध कर सकेंगे।
- CO2 – व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन से सम्बन्धित विविध पक्षों का दार्शनिक प्रबन्धन करने में निपुण हो सकेंगे।

सन्दर्भ एवं सहायक ग्रन्थ सूची :.

- Bose N. K. (Ed.),(1957). *Selections From Gandhi.* Navajivan Publishing House, Ahmedabad.
- Kast, F. E., & Rosenzweig, J. E. (1974). Organization and management: A systems approach. McGraw Hill.
- Masih, Y. (1994) *A Critical History of Western Philosophy*, Motilal Banarasidas, Delhi.
- M.K. Gandhi (1966). *An Autobiography or The Story of My Experiments with Truth*, Navajivan Publishing House, Ahmedabad,
- M.K. Gandhi (1959). *Ashram observances in Action*. Translated from Gujarati by V.G. Desai, Navajivan Publishing House, Ahmedabad.
- Marx, Karl (1959). *Economic and Philosophic Manuscripts of 1844.* David Riazanov (Etd.) Progress Publishers, Moscow.
- Marx, K. (2000). *Karl Marx: selected writings*. Oxford University Press, USA.
- Richard D Irwin Inc Homewood Illinois Megginson, L. C., Mosley, D. C., & Pietri, P. H. (1992). *Management*, The concepts and Applications, Harper & Row, New York.
- Terry, G. R. (1986). Principle of Management. Illinois Richard: D. Irwin. *Inc. Homewood*, 1.
- देसाई, बसंत (1986). *प्रबन्धन के सिद्धान्त*. नई दिल्ली ग्रन्थ अकादमी.
- अम्बेडकर, बी. आर. *सम्पूर्ण वाड़मय.* (खण्ड-2), संवैधानिक सुधार एवं आर्थिक समस्याएं
- अम्बेडकर, बी. आर. *सम्पूर्ण वाड़मय.* (खण्ड-12), रूपये की समस्याः इसका उद्भव और समाधान
- वेदालंकार, जयदेव. *वैदिक दर्शन*
- महर्षि पतंजलि, योग सूत्र, गीताप्रेस, गोरखपुर
- सरस्वती, दयानन्द (2015). सत्यार्थ प्रकाश, 83वाँ संस्करण, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।
- सिंह, बी. एन. (1973). *पाश्चात्य दर्शन*. स्टूडेन्ट्स फ्रेन्ड्स एण्ड कम्पनी, वाराणसी.
- विद्यावाचस्पति, इन्द्र (2018). मेरे पिता, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।
- दयाकृष्णा (1988). *पाश्चात्य दर्शन*. भाग – 1-2, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1		2								2	1	2		3		3		1		2	3	2	2	2
CO2		2								2	1	2		3		3		1		2	3	2	2	2